विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

गरीबी से मुक्ति सबसे बड़ा सामाजिक न्याय

देश और दुनिया आज भी सामाजिक न्याय हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही है। सामाजिक न्याय का अर्थ है सभी के लिए समानता और गरिमा। सामाजिक न्याय का मतलब समाज के सभी वर्गों को एक समान विकास और विकास के मौकों को उपलब्ध कराना है। आज विश्वभर में मानवाधिकारों का हनन सबसे बडा मुद्दा है। सामाजिक न्याय यह सुनिश्चित करता है कि समाज का कोई भी शख्स वर्ग, वर्ण या जाति की वजह से विकास की दौड में पीछे न रह जाए।

और यह तभी संभव है जब समाज से गैर बराबरी और भेदभाव को हटाया जाए। हाल ही के विभिन्न आर्थिक सर्वेक्षणों पर यकीन करें तो हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों में गरीबी और अमीरी के बीच खाई बढती ही जा रही है। इसका मतलब साफ है गरीबों के आय में गिरावट और अमीरों की आय में वृद्धि होती जा रही है। विशेषकर कोरोना महामारी के दौरान लगाए गए लॉकडाउन और अन्य बंदिशों का सबसे अधिक असर कमजोर वर्ग पर पडा है। आंकड़ों के मुताबिक भारत में जहां गरीबों की आमदनी में 53 फीसदी की गिरावट देखी गई है, वहीं अमीरों की कमाई में लगातार वृद्धि हुई है। हालाँकि भारत ही नहीं अपितु दुनियाभर में कोरोना महामारी कहर बन कर टूटी है। गौर करने वाली बात है दुनियां से जब तक अमीरी और गरीबी की खाई नहीं मिटेगी तब तक आम आदमी को सामाजिक न्याय प्राप्त करने की बातें बेमानी कही जाएगी। चाहे जितना चेतना और जागरूकता के गीत गालों से कोई फर्क पडने वाला नहीं है। संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सभी वंचितों को रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में यथेष्ट कार्य करना चाहिए। रोटी, कपडा, मकान, सुरक्षा, चिकित्सा, अशिक्षा, गरीबी, और बेरोजगारी जैसे मुद्दों से निपटने के प्रयासों को बढ़ावा देने की जरूरत है। अब तो यह मानने वालों की तादाद कम नहीं है कि जब तक धरती और आसमान रहेगा तब तक आदमजात अमीरी और गरीबी नामक दो वर्गों में बंटा रहेगा। शोषक और शोषित की परिभाषा समय के साथ बदलती रहेगी मगर भूख और गरीबी का तांडव कायम रहेगा। अमीरी और गरीबी का अंतर कम जरूर हो सकता है मगर इसके लिए संपन्न और विकसित देशों को अपनी मानसिकता बदल कर कमजोर देशों को समुचित सहायता सुलभ करानी होंगी। सामाजिक न्याय हासिल करने के लिए अमीरी और गरीबी की बाधा को पाटना जरुरी है।

सामाजिक न्याय व्यक्ति और समाज के बीच समान और न्यायपूर्ण संबंधों का दर्शन है। यह धन के वितरण, व्यक्तिगत गतिविधि के अवसरों और सामाजिक अधिकारों से निर्धारित होता है।

पश्चिमी और पुरानी दोनों एशियाई संस्कृतियों में, सामाजिक न्याय की अवधारणा अक्सर यह सुनिश्चित करने की प्रक्रिया को संदर्भित करती है कि व्यक्ति अपनी सामाजिक भूमिकाएँ निभाएँ और समाज से वह प्राप्त करें जो उनका उचित है। वर्तमान वैश्विक जमीनी स्तर के सामाजिक न्याय आंदोलनों में, सामाजिक गतिशीलता की बाधाओं को तोडने, आर्थिक न्याय के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

महात्मा गाँधी, अम्बेडकर और डॉ. लोहिया जैसे महापुरुषों ने देश में समतामूलक समाज का सपना संजोया था। संविधान में भी बराबरी के बीज का बीजारोपण किया था। इसका एक मात्र उद्देश्य यह था की कोई भी धर्म और जाति से छोटा-बड़ा नहीं होगा। सब बराबर होंगे, अमीर-गरीब के बीच विषमता नहीं होगी।

भारत की बात करें तो मोदी सरकार ने देश में सामाजिक और आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समुचित रूप से पहुँचाने का प्रयास अवश्य किया है। मगर चिंता की बात है यह है की तमाम प्रयासों के बावजूद अरबपतियों की संख्या में बढ़ोत्तरी संपन्न अर्थव्यवस्था का संकेत नहीं है। यह असफल आर्थिक व्यवस्था का एक लक्षण है। अमीरी और गरीबी के बीच बढ़ता विभाजन लोकतंत्र को कमजोर करता है। सामाजिक न्याय का मतलब समाज के सभी वर्गों को एक समान विकास और विकास के मौकों को उपलब्ध कराना है। आज विश्वभर में मानवाधिकारों का हनन सबसे बड़ा मुद्दा है। सामाजिक न्याय यह सुनिश्चित करता है कि समाज का कोई भी शख्स वर्ग, वर्ण या जाति की वजह से विकास की दौड में पीछे न रह जाए। और यह तभी संभव है जब समाज से गैर बराबरी और भेदभाव को हटाया जाए।

महात्मा गाँधी, अम्बेडकर और डॉ. लोहिया जैसे महापुरुषों ने देश में समतामूलक समाज का सपना संजोया था। संविधान में भी बराबरी के बीज का बीजारोपण किया था। इसका एक मात्र उद्देश्य यह था की कोई भी धर्म और जाति से छोटा-बड़ा नहीं होगा। सब बराबर होंगे, अमीर-गरीब के बीच विषमता नहीं होगी।

मगर आजादी के 75 वर्षों बाद भी हमारा गैर बराबरी समाप्त करने का सपना पूरा नहीं हुआ। अमीर अधिक अमीर होता चला गया और गरीब के तन के कपडे भी खत्म हो गए। समाज में भेदभाव बढ़ गया, जिसके फलस्वरूप रोटी, कपडा और मकान की हमारी बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं हुई और हम इसी में उलझ कर रह गए। हमने प्रगति अवश्य की मगर अपनी मानसिकता में कोई बदलाव नहीं किया। छोटे-बड़े की खाई बढ़ती गई। समाज का संतुलन बिगड़ गया। हालत यहाँ तक हो गई कि शिक्षा भी अपने बच्चों को मनमाफिक नहीं दिला पाए। नौकर और मालिक की स्थिति समाज में पैदा हो गई। बेरोजगारी बढ़ गई और न्यूनतम जरूरतों के लिए भी आम आदमी जूझने की स्थिति में पहुँच गया। सामाजिक न्याय हमारे लिए अभिशाप बन गया। जब तक समाज में असंतुलन की खाई नहीं पटेगी तब तक सब को न्याय नहीं मिलेगा।

नीति आयोग द्वारा हाल ही जारी एक अध्ययन के अनुसार पिछले नौ वर्षों में भारत में 24.82 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से उबर गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहा कि दलित, ओबीसी और आदिवासी उनकी सरकार की गरीब समर्थक योजनाओं के सबसे बड़े लाभार्थी हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में सबसे बड़ी उपलब्धि 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालना है। कुल मिलाकर देखा जाये तो देश की गरीबी आंकड़ों के मायाजाल में फंसी दिखाई दे रही है। मगर यह अवश्य कहा जा सकता है कि पिछले एक दशक में गरीबी उन्मूलन के प्रयास जरूर सिरे चढ़े है। सरकारी स्तर पर यदि ईमानदारी से प्रयास किये जाये और जनधन का दुरूपयोग नहीं हो तो भारत शीघ्र गरीबी के अभिशाप से मुक्त हो कर सामाजिक न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। समाज के गरीब, शोषित और पिछड़े तबके को बराबरी हक दिलाना ही सामाजिक न्याय है।

सामाजिक विषमता को समाप्त कर हम सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल कर पाएंगे और इसके लिए सब के सामूहिक प्रयासों की जरुरत है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

औद्योगिक घरानों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान

अविनाश जोशी

आज भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत नाजुक मोड़ पे है। हमारे पास प्रगति एवम विकास के अनेकों आयाम है एवम हम लोग धीरे-धीरे सफलता हासिल कर भी रहे है इसका मुख्य कारण हमारी अर्थव्यवस्था खुलेपन की नीति को बढ़ावा देना जानती है यही कारण है की आज भारत में अनेकों बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना जाल फैला के व्यवसाय को बढ़ा रही है। इस परिदृश्य में हमारे औद्योगिक घरानों के सामने अनेक चुनौतियां मंडरा रही है वक्त रहते इन्हे भी विश्व के विकसित देशों के पैमाने पे कार्य करना होगा। हमारे घराने देश की प्रतिभाओं को देश में नही रोक पा रही है विश्व का सबसे ज्यादा प्रतिभा पलायन हमारे देश से हो रहा है। घरानों का उद्देश्य अगर केवल पैसा कमाना है तो आने वाला वक्त बहुत कठिन है। तकनीकी एवम शिक्षा का स्तर विश्व में रोज नए नए आविष्कार इजाद करता है एवम हम इस दौड़ में पीछे रह जाते है।

औद्योगिक घराना से तात्पर्य ऐसे घरेलू उद्योग समूह से है, जो राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके कई औद्योगिक कार्य एवम क्षेत्र होते हैं तथा इनकी पूंजी विभिन्न क्षेत्रों में निवेशित होती है। भारत में स्वतंत्रता के पूर्व से ही कई औद्योगिक घरानों ने भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद मिश्रित क्षेत्र की अवधारणा के अंतर्गत निजी क्षेत्र एवं औद्योगिक घरानों की आर्थिक विकास में भूमिका स्वीकार की गई तथा इनका योगदान लिया जाता रहा है। इन्हें भारतीय आर्थिक नीति के निर्धारण में सहयोगी बनाया जाता है।

टाटा समूह, बिरला समूह, बजाज समूह, रिलायंस समूह, बांगुर समूह, डालमिया समूह तथा महिंद्रा समूह इस प्रकार के औद्योगिक घराने हैं, जिनका योगदान राष्ट्र के विकास में व्यापक है। यह सभी कंपनियां बहुराष्ट्रीय कंपनियों का रूप ले चुकी है। वर्तमान में इनका योगदान विभिन्न क्षेत्रों तथा आधारभूत संरचना, उर्जा, संचार, मोटर-वाहन व बीमा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्राकृतिक विपदा में भी इन घरानों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है यह सरकार के अलावा विपदा पीड़ित लोगों को आर्थिक रूप से मदद करते हैं।

बीते कुछ सालों में कुछ कंपनियां ऐसी रहीं, जिनकी विदेश में भी पहचान बनी। एक समय में भारतीय कंपनियों को विदेश में ज्यादा इज्जत नहीं मिलती थी, लेकिन कुछ कंपनियों ने विदेश में भी सफलता के झंडे गाड़कर देश का नाम रोशन किया। वहीं, कुछ कंपनियों को नुकसान के चलते कारोबार समेटना पड़ा। कुछ कंपनियां आज भारी कर्ज या घाटे के कारण संकट के दौर से गुजर रही हैं। सरल शब्दों में औद्योगिक घराना एक समूह एक बहु-उद्योग कंपनी है। एक समूह में अनेक कंपनियां शामिल होती है जो पूरी तरह से अलग-अलग उद्योगों में कई व्यावसायिक संस्थाओं की देखरेख करती है।

औद्योगिक घराने एक सार्वजनिक या निजी संरचना वाले व्यवसाय हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली विभिन्न कंपनियों का एक समूह बनाते हैं। व्यावसायिक घराने किसी देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और देश की जीडीपी में एक प्रमुख योगदानकर्ता हैं। कई विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के औद्योगिक परिदृश्य की पहचान विभिन्न व्यावसायिक समूहों द्वारा की जाती है। भारत में, 90 प्रतिशत व्यवसाय पारिवारिक स्वामित्व वाले हैं। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जहाँ सार्वजनिक और निजी दोनों खिलाड़ियों को विकास प्रक्रिया में भाग लेने की अनुमति है।

भारत में कुछ औद्योगिक घरानों ने उस देश के औद्योगीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो 20वीं सदी के मध्य तक मुख्य रूप से कृषि अर्थव्यवस्था थी। कई औद्योगिक घराने स्वतंत्रता-पूर्व से ही अस्तित्व में हैं, फिर भी कुछ ऐसे भी हैं जो स्वतंत्र भारत में उभरे और उन्होंने देश में औद्योगिक विकास की दिशा में सराहनीय भूमिका निभाई। देश की आजादी के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था उतार-चढ़ाव से गुजर रही है। 1947 में, भारत एक खुली अर्थव्यवस्था थी लेकिन 1950 के दशक के मध्य तक, बड़ा व्यवसाय एक बुरा शब्द था और जल्द ही सरकार ने बड़ी कंपनियों के विकास पर नियामक सीमाएं लगा दीं। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ अर्थव्यवस्था के केंद्र में थीं। 1991 में आर्थिक नीति एक पूर्ण व्यवस्था में आ गई, जब पीवी नरसिम्हा राव सरकार ने सुधार शुरू किए और अर्थव्यवस्था को उदार बनाया। बड़े व्यवसाय और विदेशी पूंजी अब उपहास के बजाय इच्छा की वस्तु बन गए थे।

इस पूरे बदलाव के दौरान, भारतीय अर्थव्यवस्था की एक विशेषता अत्यंत महत्वपूर्ण रही एवम उभर के आई वो थी परिवार के स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रभुत्व। शीर्ष 20 व्यावसायिक समूहों में से पंद्रह बड़े घराने के स्वामित्व वाले हैं। लेकिन, इस स्पष्ट यथास्थिति के तहत, एक बड़ा मंथन हुआ है। मुट्ठी भर को छोड़कर, अधिकांश घराने-स्वामित्व वाले समूह किनारे हो गए हैं। विशेषज्ञ इस मंथन का श्रेय घराने के अनुकूलन क्षमता कारक को देते हैं। "जिन समूहों ने 1956 के औद्योगिक लाइसेंसिंग या 1991 के बाद के बाजार सुधारों जैसे नए वातावरण को अपनाया, उनका विकास जारी रहा, जबकि अन्य रडार से गायब हो गए।" उदाहरण के लिए, 1969 के अविश्वास-विरोधी एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (एमआरटीपी) अधिनियम ने बड़े व्यवसायों के विकास पर सीमाएं लगा दीं, जिसका सीधा असर प्रमुख घरानों एवम समूहों पर पड़ा।

1991 के आर्थिक सुधारों ने इस विचार को एक बार फिर तेज कर दिया। वर्तमान शीर्ष 20 व्यावसायिक समूहों में से नौ का उदय सुधारों द्वारा प्राप्त अवसरों के कारण हुआ है - औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन, पूंजी की मुक्त सीमा पार आवाजाही, और निजी क्षेत्र के लिए बैंकिंग, बुनियादी ढांचे और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों को खोलना। देश आजादी का 76वां सालगिरह मना रहा है। मतलब देश को आज़ाद हुए 75 साल पूरे हो चुके हैं। इन 75 सालों में भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में काफी विकास किया है। इसी की देन है कि आज भारत अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया के टॉप देशों में शुमार हो चुका है।

इन 75 सालों में कुछ कंपनियां ऐसी रहीं, जिनकी विदेश में भी पहचान बनी। एक समय में भारतीय कंपनियों को विदेश में ज्यादा इज्जत नहीं मिलती थी, लेकिन कुछ कंपनियों ने विदेश में भी सफलता के झंडे गाड़कर देश का नाम रोशन किया। वहीं, कुछ कंपनियों को नुकसान के चलते कारोबार समेटना पड़ा। कुछ कंपनियां आज भारी कर्ज या घाटे के कारण संकट के दौर से गुजर रही हैं। औद्योगिक घरानों को विश्व की अर्थव्यवस्था के अनरूप ढालना होगा एवम विकास की दौड़ में साथ साथ भागना होगा। घराने आज भी विदेशी कंपनियों से कॉलोब्रेशन के पीछे भागते रहते है एवम इन कंपनियों की तकनीकी से अपना व्यापारिक लाभ बड़ाना चाहते है। इसके बेहतरीन उदाहरण है– हीरो होंडा, मारुति सुजुकी, हमे अपनी तकनीकी पे काम करना होगा आखिर कब तक हम विदेशी तकनीकी एवम ब्रांड्स का मोह नहीं छोड़ पाएंगे। आज भी भारत का एक अत्याधुनिक तबका विदेशी कार के अलावा कोई कार रखना अपनी तौहीन समझता है।

औद्योगिक घरानों को मूल्यों एवम भारतीय जनमानस के अनुरूप कार्य करना होगा। अपने सीएसआर बजट का एक बड़ा हिस्सा प्रतिभा पलायन को रोकने में लगाना चाहिए जिससे आने वाले वक्त में हमारी प्रतिभाएं हमारे देश का नाम ऊंचा करे। आज पूरा विश्व हमे देख रहा है एवम हमारे सिद्धांतो एवम विचारो को अपना रहा है हमारे औद्योगिक घरानों को भी स्वदेशी विचार पे कार्य कर देश के विकास में सहभागी बनना होगा।

अविनाश जोशी,
स्वतंत्र लेखक एवं पत्रकार।

शिल्पग्राम में "ऋतु वसंत" उत्सव का आगाज़

उदयपुर, (कासं)। शिल्पग्राम में वसंत की भीनी-भीनी बयार के बीच जब प्रसिद्ध शास्त्रीय और पार्श्व गायिका रोंकिनी गुप्ता की रेशमी आवाज में विलंबित ख्याल की स्वरलहरियां फिजा में घुलीं तो जहां समूचा शिल्पग्राम क्लासिकल के सागर में गोते लगाने लगा, वहीं इसमें प्रयुक्त राग बागेश्वरी भी मानो रोंकिनी से सधे सुरों में निबद्ध होकर खुद को धन्य मान रही थी। शुक्रवार को पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से शिल्पग्राम में आयोजित हो रहे तीन दिवसीय "ऋतु वसंत उत्सव" के पहले दिन की क्लासिकल प्रस्तुतियां दी गई।

उदयपुर के शिल्पग्राम में तीन दिवसीय "ऋतु वसंत' का आगाज हुआ।

- **शास्त्रीय और पार्श्व गायिका रोंकिनी गुप्ता के सुरों और आरती के कथक ने बांधा समा**

केंद्र का यह शास्त्रीय संगीत व नृत्य को समर्पित प्रोग्राम साल 2016 से निरंतर नई ऊंचाइयां छू रहा है और इसमें देश के कई प्रसिद्ध कलाकार मेवाड़ के कलाप्रेमियों के रूबरू हो चुके हैं।

रोंकिनी गुप्ता ने विलंबित एकताल में बड़ा ख्याल की 'नीके लागे तोरे नैन' की बंदिश पेश की तो तमाम कला प्रेमी सुरों में जैसे खो से गए। इसके बाद मध्य लय की बंदिश 'धीर कैसे धरूं सजनी...' की पेशकश पर क्लासिकल के जानकारों का हृदय झंकृत कर दिया, तो द्रुत लय एकताल में 'अचर ना धरो मुरारी...' और राग हंसध्वनि में रूपक में 'तराना' की प्रस्तुति से समां बांध दिया। संगीतकार एआर रहमान की फेवरिट क्लासिकल सिंगर रोंकिनी ने 'मोरी पैजनिया...' की द्रुत बंदिश तीन ताल में पेश कर खूब तालियां बटोरी। ज्यों-ज्यों शाम ढलने लगी, रोंकिनी की लयकारी और सुरों की जादूगरी के साथ ही तबले की उम्दा संगत ने अपनी रोशनी बिखेर शिल्पग्राम प्रांगण को शुद्ध भारतीय संगीत से जगमग रखा। जब उन्होंने राग सोहनी में 'डारूंगी-डारूंगी तोहपे रंग सांवरिया...' और तीन ताल में 'रंग ना डारो श्याम जी...' पेश किया तो श्रोता वाह-वाह कर उठे। उनके साथ तबले पर दीपक मराठे और हारमोनियम पर आशीष रागवानी ने संगत की। इस शास्त्रीय सांझ में कथक ने क्लासिकल के अनूठे रंग भर दिए जब प्रसिद्ध नृत्यांगना डॉ. आरती सिंह ने अपनी टीम के साथ कथक के बदलते और निरंतर निखरते रूप को पेश किया। उन्होंने भक्तिकाल, मुगलकाल और आधुनिक काल में कथक के विभिन्न रूपों की बहुत की बारीकी से प्रस्तुति दी। इसके बाद उन्होंने खूबसूरत लयकारी और ताल में बसंत ऋतु को बहुत ही उम्दा तरीके से उकेरा। उषा शर्मा, तेजस्विता नंदिनी शाह, राशि कौर, पारूल कुंभालकर, प्रेरणा देवांगन, चिरंजीवी हल्दर और नरेंद्र छत्री ने उनका साथ दिया। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि 'ऋतु वसंत' उत्सव में शनिवार को दूसरे दिन पं.राजकुमार मजूमदार, उस्ताद असगर हुसैन और उस्ताद अख्तर हसन की वायलिन और संतूर की खूबसूरत जुगलबंदी और जयपुर के शास्त्रीय गायक सौरभ वशिष्ठ की गायकी रहेगी।

निषित कुमार को इथोपिया दूतावास ने किया सम्मानित

जयपुर। भारत-अफ्रीका संबंधों के मद्देनजर दिल्ली स्थित इथोपियन दूतावास में एक समारोह में शहरी विकास और मानव हितों के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने नामी पर्यावरणविद् व सामाजिक कार्यकर्ता निषित कुमार (बबलू चौधरी) को सम्मानित किया गया। उन्हें पर्यावरण के क्षेत्र में किए जा रहे अथक प्रयासों के लिए इथोपिया के राजदूत ने सम्मानित किया है। समारोह में अपने-अपने क्षेत्रों में बेहतरीन कार्य निष्पादन के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित लोगों को सम्मानित किया गया।

दिल्ली स्थित इथोपियन दूतावास में एक समारोह में पर्यावरणविद् व सामाजिक कार्यकर्ता निषित कुमार को सम्मानित किया गया।

- **पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया**

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के मौके पर एक सौ से अधिक ट्राइसिकिल वितरित करने पर सुर्खियों में आए निषित ने अपने होमटाउन झुंझुनूं में 17 गौशालाओं को 55 लाख रुपए की आर्थिक मदद की है।

गांव में हॉस्पिटल निर्माण के लिए 6 बीघा जमीन देने समेत लंपी महामारी के दौरान गौशालाओं 13 लाख रुपए का पैकेज देकर संवेदनशीलता की मिसाल कायम की है। निषित झुंझुनूं शहर के बीचों बीच स्थित बीहड़ स्थान को इको टूरिज्म स्पेस के रूप में बसाने का बेहतरीन प्रयास कर रहे है। इसके अलावा पहाड़ व पर्यावरण को लेकर भी कई परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। वे आगामी 10 सालों में शहरी विकास की ओर अपने विजन के लिए अग्रसर हैं।

राशिफल शनिवार 24 फरवरी, 2024

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, शनिवार, विक्रम संवत 2080, मघा नक्षत्र रात्रि 10:21 तक, अतिगंड योग दिन 1:34 तक, बव करण सांय 6:00 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मेष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सत्यव्रत, माघी पूर्णिमा, होलिका रोपण, भैरव जयंती, माघी मासम है। आज माघ स्नान समाप्त होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:25 से 9:50 तक, चर 12:40 से 2:05 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 4:55 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 6:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र में किसानों का ईसबगोल की खेती की ओर बढ़ा रूझान

कम पानी व कम लागत में ईसबगोल की खेती कर मुनाफा कमाया जा सकता है

बीकानेर, (निसं)। मौसम की उपयुक्तता और अच्छे मुनाफे के दम पर ईसबगोल की खेती ने श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र में अपने पैर जमाने शुरू कर दिया है। पिछले दो सालों में किसानों का ईसबगोल की खेती की तरफ रुझान बढ़ा है। जानकारी के अनुसार औषधीय गुणों से भरपूर ईसबगोल के लिए श्रीडूंगरगढ़ का मौसम उपयुक्त है। कम पानी व कम लागत में ईसबगोल की खेती कर मुनाफा कमाया जा सकता है। अच्छी उपज के लिए नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक गेहूं, जौ, सरसों आदि की बुआई से 15 दिन पहले ईसबगोल की बुआई उचित रहती है। वहीं बीज के जमाव के लिए पर्याप्त नमी जरूरी होती है

कृषि विभाग के अधिकारियों के अनुसार ईसबगोल के पौधे में बीमारी कम लगती है। वहीं पानी भी कम चाहिए। भाव अच्छे मिलने के साथ ही फसल को तैयार करने में मेहनत भी कम होती है। आयुर्वेदिक दवाओं के रूप में इसकी विशेष मांग होती है। इसकी पैदावार एक बीघा में दो क्विंटल तक हो जाती है। फसल चार-पांच माह में तैयार हो जाती है।

श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र की बलुई मिट्टी में ईसबगोल की खेती की शुरुआत पिछले दो तीन सालों से हुई है और हर साल इसका रकबा बढ़ता जा रहा है। इस समय ईसबगोल के भाव 9000 से 10000 रुपए प्रति क्विंटल है। ऐसे में एक बीघा में 15 से 20 हजार रुपए का लाभ किसान प्राप्त कर लेते हैं। गत वर्ष इसके भाव 14 हजार रुपए क्विंटल तक पहुंच गए थे। इस साल ईसबगोल के रकबे में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है। उपखंड क्षेत्र में वर्ष 2022-23 में इसका बिजान 1850 हेक्टेयर बीघा में था, जो इस वर्ष करीब 3670 हेक्टेयर हुआ है। चने की घटती पैदावार एवं सरसों की फसल में बीमारियां व खराबे को देखते हुए किसानों ने इस फसल की तरफ रुख किया है।

- **ईसबगोल की पैदावार एक बीघा में दो क्विंटल तक हो जाती है**

बिग्गा गांव के किसान भागीरथराम तावणियां ने बताया कि उसने पहली बार अपने खेत में 35 बीघा जमीन पर ईसबगोल की खेती की है। इस फसल का आसानी से बिजान के साथ ही कम पानी, कम मेहनत और कम लागत में फसल तैयार हो जाती है। वहीं पिछले दो सालों से बाजार भाव भी अच्छे मिल रहे हैं।

किसान प्रमाणित बीज और खेती के संबंध में कृषि विशेषज्ञों से समय-समय पर जानकारी लेकर पैदावार लें, तो पैदावार अच्छी गुणवत्ता के साथ अधिक भी होगी। अमूमन किसान प्रमाणित बीज नहीं लेकर निजी कंपनियों का बना टीएल सीड काम में लेते हैं, जिससे पैदावार का औसत कम बैठता है। हालांकि इस फसल में कुछ सावधानी भी बरतनी पड़ती है। पकाव के समय वर्षा हो जाए, तो बीज झड़ जाता है तथा छिलका फूल जाता है। इससे गुणवत्ता व पैदावार दोनों पर असर पड़ता है।

सुरेंद्र मारू, कृषि अधिकारी, श्रीडूंगरगढ़, बीकानेर का कहना है कि भाव अच्छे मिलने व पानी की कमी के चलते श्रीडूंगरगढ़ तहसील के किसानों का ईसबगोल की खेती की तरफ रुझान बढ़ रहा है। इस फसल में बीमारी भी कम लगती है। यदि किसान अन्य व्यापारिक फसलों की तरह कृषि वैज्ञानिकों की सलाह से इसकी खेती करे, तो कम लागत लगाकर अधिक आमद कर सकते हैं।